



Wuzu Aur Science (Gujarati)

વજુ ઓર સાઇન્સ



શૈખે તરીકતા, રખીરે અહલે સુલ્તા. ડાનિયે દા'વતે ઇસ્લામી. હામરત અલ્લામા મૌલાના અબુ ગિલાવ

મુહમ્મદ ઇલ્યાસ અત્તાર કાદિરી ર-મવી



الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

किताब पढने की दुआ

अज : शैभे तरीकत, अभीरे अडले सुन्नत, बानिये दा'वते ईस्लामी, डजरत अद्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद ईल्यस अतार कादिरी २-जवी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ
दीनी किताब या ईस्लामी सबक पढने से पडले जैल में दी दुई दुआ पढ लीजिये اللَّهُمَّ اجْعَلْهُ لِي فِي شَأْنِ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढेंगे याद रहेगा. दुआ येह है :

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَأَنْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

तरजमा : ओ अद्लाह! हम पर ईल्मो हिकमत के दरवाजे भोल दे और हम पर अपनी रहमत नाजिल करमा ! ओ अ-जमत और बुजुर्गी वाले । (المستطرف ج ١ ص ٤٠٤ دار الفكر بيروت)
नोट : अव्वल आभिर अेक अेक बार दुरुद शरीफ पढ लीजिये.

तालिबे गमे मदीना

व बकीअ

व मद्दिरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.



वुजू और साईन्स

येह रिसाला (वुजू और साईन्स)

शैभे तरीकत, अभीरे अडले सुन्नत, बानिये दा'वते ईस्लामी डजरत अद्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद ईल्यस अतार कादिरी २-जवी जियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ ने उर्दू ज्बान में तहरीर करमाया है.

मजलिसे तराजिम (दा'वते ईस्लामी) ने ईस रिसाले को गुजराती रस्मुल जत में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाअेअ करवाया है. ईस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाअें तो मजलिसे तराजिम को (ब जरीअअे मक्तूब, ई-मेईल या SMS) मुत्तलअ करमा कर सवाब कमाईये.

राबिता : मजलिसे तराजिम (दा'वते ईस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना, सिलेकटेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,

तीन दरवाजा, अहमदआबाद-1, गुजरात

MO. 9374031409 • E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

वुजू और साईन्स¹

सिर्फ 23 सड़कत पर मब्नी येड भयान मुकम्मल पढ लीजिये
ان شاء الله عزوجل आप वुजू के बारे में हैरत अंगेज मा'लूमात से
मालामाल होंगे.

दुइटे पाक की इजीलत

अद्लाह के मडबूब, दानाअे गुयूब, मुनज्जहुन अनिल उयूब
عَزَّ وَجَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने अ-जमत निशान है : “अद्लाह
की भातिर आपस में मडबूबत रभने वाले जभ बाहम (या'नी आपस में) मिलें
और मुसा-इडा करें (या'नी हाथ मिलाओं) और नबी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالِهِ وَسَلَّمَ
पर दुइटे पाक पढ़ें तो उन के जुदा होने से पडले पडले दोनों² के अगले पिछले
गुनाह बपश दिये जाते हैं.” (مُسْنَدُ أَبِي يَغْلَى ج 3 ص 90 حديث 290)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

वुजू की डिक्मतें सुनने के सभब कबूले इस्लाम

अेक साहिब का भयान है : मैं ने बेद्विजयम में यूनीवर्सिटी के
अेक गैर मुस्लिम Student (तालिबे इल्म) को इस्लाम की दा'वत दी.
1 : येड भयान अभीरे अडले सुन्नत لدينه كَمَا تَرَكْتُمُ الْعَالِيَةَ ने तबलीगे कुरआनो सुन्नत की
आलमगीर गैर सियासी तडरीक दा'वते इस्लामी के त-लबा के दो² रोजा इजतिमाअ
(मुइरमुल इराम 1421 सि.इ./06-04-2000) नवाब शाह पाकिस्तान में इरमाया. जइरी
तरमीम के साथ तडरीरन हाजिरे पिटमत है. मजलिसे मक-त-भतुल मदीना

करमाने मुस्तकاً عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर ओक बार दुइदें पाक पढा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रिकमतें भेजता है. (स्म)

उस ने सुवाल किया, वुजू में क्या क्या साईन्सी छिकमतें हैं ? मैं ला जवाब हो गया. उस को ओक आलिम के पास ले गया लेकिन उन को भी ईस की मा'लूमात न थीं. यहां तक के साईन्सी मा'लूमात रचने वाले ओक शप्स ने उस को वुजू की काई भूबियां बताईं मगर गरदन के मस्ह की छिकमत बताने से वोह भी कासिर रहा. वोह गैर मुस्लिम नौ जवान बला गया. कुछ अर्से के बा'द आया और कहने लगा : हमारे प्रोफेसर ने दौराने लेकर बताया : “अगर गरदन की पुशत और अतराफ पर रोजाना पानी के बन्द कतरे लगा दिये जायें तो रीठ की उड़ी और डराम मज्ज की भराबी से पैदा होने वाले अमराज से तडकडुज छसिल हो जाता है.” येह सुन कर वुजू में गरदन के मस्ह की छिकमत मेरी समज में आ गई लिहाजा मैं मुसल्मान होना चाहता हूं और वोह मुसल्मान हो गया.

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मगरिबी जर्मनी का सेमीनार

मगरिबी ममालिक में मायूसी (या'नी Depression) का मरज तरक्की पर है, हिमाग झेल हो रहे हैं, पागल जानों की ता'दाद में ईजाफा होता जा रहा है. नफिसियाती अमराज के माहिरिन के यहां मरीजों का तांता बंधा रहता है. मगरिबी जर्मनी के रिप्लोमा होल्डर ओक पाकिस्तानी इज्जियो थेरापिस्ट का कहना है : मगरिबी जर्मनी में ओक सेमीनार हुवा जिस का मौजूअ था : “मायूसी (Depression) का ईलाज अदवियात के ईलावा और किन किन तरीकों से मुम्किन है ” ओक डॉक्टर ने अपने मकाले

किरमाने मुस्तक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो शीशु मुज पर दुरुद पाक पढना भूल गया वोड जन्त का रास्ता भूल गया. (جران)

में येड हैरत अंगेज ँन्किशाफ़ किया के मैं ने डिप्रेसन के यन्द मरीजों के रोजाना पांच⁵ बार मुंड धुलाये कुछ अर्से बा'द उन की भीमारी कम हो गई. फिर जैसे ही मरीजों के दूसरे ग्रूप के रोजाना पांच⁵ बार हाथ, मुंड और पाँउ धुलवाये तो मरज में बहुत ँफ़ाका हो गया (या'नी कमी आ गई). येही डॉक्टर अपने मकाले के आभिर में अ'तिराफ़ करता है : मुसल्मानों में मायूसी का मरज कम पाया जाता है क्यूंके वोड दिन में कई मर्तबा हाथ, मुंड और पाँउ धोते (या'नी वुजू करते) हैं.

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

वुजू और हाँड ब्लड प्रेशर

अक हाँट स्पेश्यालिस्ट का अडे वुसूक (या'नी अ'तिमाद) के साथ कहना है : हाँड ब्लड प्रेशर के मरीज को वुजू करवाओ फिर उस का ब्लड प्रेशर येक करो लाजिमन कम होग़ा. अक मुसल्मान माहिरे नफ़िसयात का कौल है : “नफ़िसयाती अमराज का बेहतरीन ँलाज वुजू है.” मगरिबी माहिरीन नफ़िसयाती मरीजों को वुजू की तरड रोजाना कई बार बदन पर पानी लगवाते हैं.

वुजू और झालिज

वुजू में जो तरतीब वार आ'जा धोअे जाते हैं येड भी डिक्मत से ખाली नहीं. पहले हाथ पानी में डालने से जिस्म का आ'साबी निजाम मुत्तलअ हो जाता है और फिर आडिस्ता आडिस्ता येडरे और दिमाग की रगों की तरड ँस के अ-सरात पडोंयते हैं. वुजू में पहले हाथ धोने फिर कुल्ली करने फिर नाक में पानी डालने फिर येडरा और

इरमाने मुस्तफ़ी، صلى الله تعالى عليه و آله وسلم : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुज पर दुर्रद पाक न पढा तइकीक वोह बढ भप्त हो गया. (उरुः)

टीगर आ'जा धोने की तरतीब इल्लिज की रोकथाम के लिये मुफ़ीद है. अगर येहरा धोने और मसूह करने से आगाज किया जाये तो बदन कई बीमारियों में मुज्तला हो सकता है !

मिस्वाक का कद्रदान

मीठे मीठे इस्लामी भाईयो ! वुजू में मुन्तअदद सुन्नतें हैं और हर सुन्नत मज्जने हिकमत है. मिस्वाक ही को ले लीजिये ! बय्या बय्या जानता है के वुजू में मिस्वाक करना सुन्नत है और इस सुन्नत की ब-र-कतों का क्या कहना ! अेक ब्योपारी का कहना है : स्वीजर लेन्ड में अेक नौ मुस्लिम से मेरी मुलाकात हुई, उस को मैं ने तोहूतइन मिस्वाक पेश की, उस ने प्शुश हो कर उसे लिया और यूम कर आंभों से लगाया और अेक दम उस की आंभों से आंसू छलक पडे, उस ने जेब से अेक रुमाल निकाला उस की तह भोली तो उस में से तकरीबन दो² इन्च का छोटा सा मिस्वाक का टुकडा बरआमद हुआ. कहने लगा : मेरी इस्लाम आ-वरी के वक्त मुसल्मानों ने मुजे येह तोहफ़ा दिया था. मैं बहुत संभाल संभाल कर इस को इस्ति'माल कर रहा था येह भत्म होने को था लिहाजा मुजे तश्वीश थी के अल्लाह جبار ने करम इरमाया और आप ने मुजे मिस्वाक इनायत इरमा दी. फिर उस ने बताया के अेक अर्से से मैं दांतों और मसूहों की तकलीफ़ से दो यार था. हमारे यहां के डेन्टिस्ट से इन का इलाज बन नहीं पड रहा था. मैं ने इस मिस्वाक का इस्ति'माल शुइअ किया थोडे ही दिनों में मुजे इफ़ाका (इअेदा) हो गया. मैं डोकटर के पास गया तो वोह हैरान रह गया और पूछने

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : جِس نے مُوڑ પર દસ મરતબા સુબહ ઓર દસ મરતબા શામ દુરૂદે પાક પઢા.
(ઉસે ક્રિયામત કે દિન મેરી શફાઅત મિલેગી. (અરુઝુનનામ))

લગા, મેરી દવા સે ઈતની જલ્દી તુમ્હારા મરઝ દૂર નહીં હો સકતા, સોચો કોઈ ઓર વજહ હોગી. મેં ને જબ ઝેહન પર ઝોર દિયા તો ખયાલ આયા કે મેં મુસલ્માન હો ચુકા હૂં ઓર યેહ સારી બ-ર-કત મિસ્વાક હી કી હૈ. જબ મેં ને ડોક્ટર કો મિસ્વાક દિખાઈ તો વોહ હૈરત સે દેખતા હી રહ ગયા.

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

કુવ્વતે હાફિઝા કે લિયે

મીઠે મીઠે ઈસ્લામી ભાઈયો ! મિસ્વાક મેં બે શુમાર દીની વ દુન્યવી ફવાઈદ હૈં. ઈસ મેં મુ-તઅદદ કીમિયાવી અજઝા હૈં જો દાંતોં કો હર તરહ કી બીમારી સે બચાતે હૈં. હાશિયા તહતાવી મેં હૈ : “મિસ્વાક સે કુવ્વતે હાફિઝા બઢતી, દર્દે સર દૂર હોતા ઓર સર કી રગોં કો સુકૂન મિલતા હૈ, ઈસ સે બલગમ દૂર, નઝર તેઝ, મે’દા દુરુસ્ત ઓર ખાના હઝમ હોતા હૈ, અકલ બઢતી, બચ્ચોં કી પૈદાઈશ મેં ઈઝાફા હોતા, બુઢાપા દેર મેં આતા ઓર પીઠ મઝબૂત હોતી હૈ.” (حاشية الطحطاوى على مراقى الفلاح ص ٦٩)

મિસ્વાક કે બારે મેં દો અહાદીસે મુબા-ર-કા

﴿1﴾ જબ સરકારે મદીના صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ અપને મુબારક ઘર મેં દાખિલ હોતે તો સબ સે પહલે મિસ્વાક કરતે (مسلم ص ١٠٢ حديث ٢٠٣) ﴿2﴾ જબ સરકારે નામદાર صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ નીંદ સે બેદાર હોતે તો મિસ્વાક કરતે.

(ابوداؤد ج ١ ص ٥٤ حديث ٥٧)

करमाने मुस्तफ़ा (عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा ठिक़ हुवा और उस ने मुज पर दुरुद शरीफ़ न पढा उस ने जफ़ा की. (عبدالرحمن)

मुंड के छाले का ँलाज

अतिब्बा (या'नी डॉक्टरों) का कलना है : “बा'ज अवकात गरमी और मे'दे की तेजाबियत से मुंड में छाले पड जाते हैं और ँस मरज से पास डिस्म के जरासीम मुंड में डैल जाते हैं, ँस के ँलाज के लिये मुंड में ताजा मिस्वाक मलेँ और ँस का लुआब कुछ देर तक मुंड के अन्दर फिराते रहें. ँस तरह कँ मरीज ठीक़ हो चुके हैं.”

दूथ ब्रश के नुकसानात

माडिरीन की तलकीक़ के मुताबिक़ “80 ईसद अमराज मे'दे (पेट) और दांतों की बराबी से पैदा होते हैं.” उमूमन दांतों की सफ़ाई का बयाल न रबने की वजह से मसूढों में तरह तरह के जरासीम परवरिश पाते फिर मे'दे में जाते और तरह तरह के अमराज का सबब बनते हैं. याद रहें ! “दूथ ब्रश” मिस्वाक का ने'मल बदल नहीं. बल्के माडिरीन ने अे'तिराफ़ किया है : ﴿1﴾ जब ब्रश अेक बार ँस्ति'माल कर लिया जाता है तो उस में जरासीम की तल जम जाती है पानी से धुलने पर भी वोह जरासीम नहीं जाते बल्के वहीँ नशवो नुमा पाते रहते हैं ﴿2﴾ ब्रश के बाँस दांतों की ओपरी कुदरती यमकीवी तल उतर जाती है ﴿3﴾ ब्रश के ँस्ति'माल से मसूढे आडिस्ता आडिस्ता अपनी जगह छोडते जाते हैं जिस से दांतों और मसूढों के दरमियान बला (GAP) पैदा हो जाता है और उस में गिजा के जर्त इंसते, सडते और जरासीम अपना घर बनाते हैं ँस से दीगर बीमारियों के ँलावा आंभों के तरह तरह के अमराज भी जनम लेते हैं, ँस से नजर कमजोर हो जाती है बल्के बा'ज अवकात आदमी अन्धा हो जाता है.

ફરમાને મુસ્તફા : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : જો મુઝ પર રોઝ જુમુઆ દુરૂદ શરીફ પઢેગા મેં ક્રિયામત કે દિન ઉસ કી શકાઅત કરૂંગા. (કબ્રાલ)

ક્યા આપ કો મિસ્વાક કરના આતા હૈ ?

હો સકતા હૈ આપ કે દિલ મેં યેહ ખયાલ આએ કે મેં તો બરસોં સે મિસ્વાક ઈસ્તિ'માલ કરતા હૂં મગર મેરે તો દાંત ઓર પેટ દોનોં હી ખરાબ હૈં ! મેરે ભોલે ભાલે ઈસ્લામી ભાઈ ! ઈસ મેં મિસ્વાક કા નહીં આપ કા અપના કુસૂર હૈ. મેં (સગે મદીના عَنْ ઈસ નતીજે પર પહોંચા હૂં કે આજ શાયદ લાખોં મેં સે કોઈ એકઆધ હી એસા હો જો સહીહ ઉસૂલોં કે મુતાબિક મિસ્વાક ઈસ્તિ'માલ કરતા હો, હમ લોગ અક્સર જલ્દી જલ્દી દાંતોં પર મિસ્વાક મલ કર વુઝૂ કર કે ચલ પડતે હૈં યા'ની યૂં કહિયે કે હમ મિસ્વાક નહીં બલકે “રસ્મે મિસ્વાક” અદા કરતે હૈં !

“મિસ્વાક કરના સુન્નતે મુબા-રકા હૈ” કે બીસ હુરૂફ કી નિસ્બત સે મિસ્વાક કે 20 મ-દની ફૂલ

❀ દો ફરામીને મુસ્તફા : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : દો² રકઅત મિસ્વાક કર કે પઢના બિગૈર મિસ્વાક કી 70 રકઅતોં સે અફઝલ હૈ (التَّرْغِيبُ وَالتَّرْهِيْبُ ج ١ ص ١٠٢ حديث ١٨) ❀ મિસ્વાક કા ઈસ્તિ'માલ અપને લિયે લાઝિમ કર લો ક્યૂંકે યેહ મુંહ કી સફાઈ ઓર રબ તઆલા કી રિઝા કા સબબ હૈ (مُسْنَدُ إِمَامِ أَحْمَدِ بْنِ حَنْبَلٍ ج ٢ ص ٤٣٨ حديث ٥٨٦٩) ❀ હઝરતે સચ્ચિદુના ઈબને અબ્બાસ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا સે રિવાયત હૈ કે મિસ્વાક મેં દસ ખૂબિયાં હૈં : મુંહ સાફ કરતી, મસૂદે કો મઝબૂત બનાતી હૈ, બીનાઈ બઢાતી, બલગમ દૂર કરતી હૈ, મુંહ કી બદબૂ ખત્મ કરતી, સુન્નત કે મુવાફિક હૈ, ફિરિશ્તે ખુશ હોતે હૈં, રબ રાઝી હોતા હૈ, નેકી બઢાતી ઓર મે'દા દુરુસ્ત કરતી હૈ (جَمْعُ الْجَوَامِعِ لِلشُّيُوطِيِّ ج ٥ ص ٢٤٩ حديث ١٤٨٦٧) ❀ સચ્ચિદુના ઈમામ શાફેઈ

﴿الْبَيْتِ﴾ इरमाने मुस्तफ़ा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज़ पर दुइदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये तदारत है.

कुज़ूल भातो से परहेज़, मिस्वाक का इस्ति'माल, सु-लहा या'नी नेक लोगो की सोडभत और अपने इल्म पर अमल करना (حياة الحيوان للميرى ج ٢ ص ١٦٦)

❁ **डिकायत** : हज़रते सय्यिदुना अब्दुल वल्हाब शा'रानी قُدَسَ سِرُّهُ التُّورَانِي नकल करते हैं : ओक बार हज़रते सय्यिदुना अबू बक़ शिब्दी बगदादी नकल करते हैं : ओक बार हज़रते सय्यिदुना अबू बक़ शिब्दी बगदादी को वुजू के वक्त मिस्वाक की ज़रत हुँ, तलाश की मगर न मिली, लिहाज़ा ओक दीनार (या'नी ओक सोने की अशरफ़ी) में मिस्वाक खरीद कर इस्ति'माल इरमाँ. बा'ज लोगो ने कहा : येह तो आप ने बहुत ज़ियादा खर्च कर डाला ! कहीं इतनी महंगी भी मिस्वाक ली जाती है ? इरमाया : बेशक येह दुनिया और इस की तमाम चीजों अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक मख़र के पर बराबर भी हैसियत नहीं रफती, अगर बरोजे कियामत अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुज़ से येह पूछ लिया तो क्या जवाब दूंगा के : “तूने मेरे प्यारे हबीब की सुन्नत (मिस्वाक) क्यूं तर्क की ? मैं ने तुजे जो मालो दौलत दिया था उस की हकीकत तो (मेरे नज़दीक) मख़र के पर बराबर भी नहीं थी, तो आपिर औसी हकीर दौलत इतनी अजीम सुन्नत (मिस्वाक) हासिल करने पर क्यूं खर्च नहीं की ?”

❁ **दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे** (مُلَخَّصٌ اَزْ لَوَاقِعِ الْاَنْوَارِ ص ٣٨) मक-त-अतुल मदीना की मत्बूआ बहारे शरीअत जिल्द अक्वल सफ़हा 288 पर सदरुशशरीअह, अदरुत्तरीकह, हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي लिखते हैं, मशाइफे किराम इरमाते हैं : जो शप्स मिस्वाक का आदी हो मरते वक्त उसे कलिमा पढना नसीब होगा और जो अइयून खाता हो मरते वक्त उसे

करमाने मुस्तफ़ा : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى غَلِيظٌ وَإِدْرَسٌ : तुम जहाँ भी हो मुज़ पर दूरे पढो के तुम्हारा दूरे मुज़ तक पहुँचता है. (प्रश्न)

कलिमा नसीब न होगा ❁ मिस्वाक पीलू या जैतून या नीम वगैरा कउवी लकडी की हो ❁ मिस्वाक की मोटाई छुंग्लिया या'नी छोटी उंगली के बराबर हो ❁ मिस्वाक अेक बालिश्त से ज़ियादा लम्बी न हो वरना उस पर शैतान बैठता है ❁ इस के रेशे नर्म हों के सप्त रेशे दांतों और मसूढ़ों के दरमियान जला (Gap) का बाईस बनते हैं ❁ मिस्वाक ताज़ा हो तो ખૂબ (या'नी बेहतर) वरना इस का अेक सिरा कुछ ढेर पानी के गिलास में बिगो कर नर्म कर लीजिये ❁ मुनासिब है के इस के रेशे रोजाना काटते रहिये के रेशे उस वक्त तक कारआमद रहते हैं जब तक उन में तलभी बाकी रहे ❁ दांतों की यौडाई में मिस्वाक कीजिये ❁ जब भी मिस्वाक करनी हो कम अज़ कम तीन बार कीजिये ❁ हर बार धो लीजिये ❁ मिस्वाक सीधे हाथ में इस तरह लीजिये के छुंग्लिया या'नी छोटी उंगली उस के नीचे और बीच की तीन उंग्लियां उपर और अंगूठा सिरे पर हो ❁ पहले सीधी तरफ़ के उपर के दांतों पर फिर उलटी तरफ़ के उपर के दांतों पर फिर सीधी तरफ़ नीचे फिर उलटी तरफ़ नीचे मिस्वाक कीजिये ❁ मुट्टी बांध कर मिस्वाक करने से अवासीर हो जाने का अन्देशा है ❁ मिस्वाक वुजू की सुन्नते कब्लिया है अलअत्ता सुन्नते मुअक्कदा उसी वक्त है जब के मुंड में अदबू हो (माખूज़ अज़ इतावा र-अविय्या, जि. 1, स. 623) ❁ मिस्वाक जब ना काबिले इस्ति'माल हो ज़ाये तो इंक मत दीजिये के येह आलअे अदाअे सुन्नत है, किसी जगह अेहतियात से रख दीजिये या दफ़न कर दीजिये या पथर वगैरा वज़न बांध कर समुन्दर में डुबो दीजिये. (तफ़सीली मा'लूमात के लिये मक-त-अतुल मदीना की मत्बूआ अहारे शरीअत जिल्द अव्वल सफ़हा 294 ता 295 का मुता-लआ इरमा लीजिये)

करमाने मुस्तक। صلى الله تعالى عليهم و آله و سلم : जिस ने मुज़ पर दस भरतभा दुइद पाक पढा अल्लाह عزوجل उस पर सो
रहमतें नाज़िल करमाता है. (طبرانی)

हाथ धोने की डिक्मतें

वुजू में सब से पहले हाथ धोये जाते हैं इस की डिक्मतें मुला-हजा हों : मुफ्तविइ यीजों में हाथ उलते रहने से हाथों में मुफ्तविइ कीमियावी अजजा और जरासीम लग जाते हैं अगर सारा दिन न धोये जायें तो जल्द ही हाथ धन जिल्दी अमराज में मुफ्तला हो सकते हैं : «1» हाथों के गरमी दाने «2» जिल्दी सोज़िश या'नी ખાલ की सूजन «3» अगज़ीमा «4» इङ्ग्टी¹ की बीमारियां «5» जिल्द की रंगत तब्दील हो जाना वगैरा. जब हम हाथ धोते हैं तो उग्वियों के पोरों से शुआयें (Rays) निकल कर अेक अैसा हल्का बनाती हैं जिस से हमारा अन्द्इनी बर्की निज़ाम मु-तडर्रिक हो जाता है और अेक हद तक बर्की रौ हमारे हाथों में सिमट आती है जिस से हमारे हाथों में हुस्न पैदा हो जाता है.

कुल्ली करने की डिक्मतें

पहले हाथ धो लिये जाते हैं जिस से वोह जरासीम से पाक हो जाते हैं वरना येह कुल्ली के जरीअे मुंइ में और इर पेट में जा कर मु-तअदद अमराज का बाईस बन सकते हैं. हवा के जरीअे ला ता'दाह मोहलिक जरासीम नीज़ गिजा के अजजा हमारे मुंइ और दांतों में लुआब के साथ चिपक जाते हैं. युनान्हे वुजू में भिस्वाक और कुल्लियों के जरीअे मुंइ की बेहतरीन सफ़ाई हो जाती है. अगर मुंइ को साफ़ न किया जाये तो धन अमराज का ખतरा पैदा हो जाता है : «1» अेइज़ (Aids) के इस की धब्तिदाई अलामात में मुंइ का पकना भी शामिल है. अेइज़ का ता हाल ड़क्टर धलाज दरयाइत नही कर पाये इस भरज

دينه

1 : वोह जरासीम जो किसी यीज पर काई की तरड जम जाते हैं.

﴿۱﴾ इरमाने मुस्तफ़ा علی اللہ تعالیٰ علیہ و آلہ وسلم : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोड़ मुज़ पर दुइद शरीफ़ न पड़े तो वोड़ लोगों में से कन्जूस तरीन शप्स है. (ज़िब्रिल)

में बदन का मुदा-इ-अती निज़ाम नाकारा हो जाता है, इस में अमराज़ का मुकाबला करने की कुव्वत नहीं रहती और मरीज़ घुल घुल कर मर जाता है ﴿2﴾ मुंड के कनारों का इटना ﴿3﴾ मुंड और छोटों की दादकूबा (Moniliasis) ﴿4﴾ मुंड में इइंटी की बीमारियां और छाले वगैरा. नीज़ रोज़ा न हो तो कुल्ली के साथ गर-गरा करना भी सुन्नत है. और पाबन्दी के साथ गर-गरे करने वाला कव्वे (Tonsil) बढने और गले के बहुत सारे अमराज़ उता के गले के के-सर से मडकूज़ रहता है.

नाक में पानी डालने की हिकमतें

इइंजों को औसी हवा दरकार होती है जो जरासीम, धूअें और गर्दों गुबार से पाक हो और उस में 80 ईसद रतूबत (या'नी तरी) हो औसी हवा इराहम करने के लिये अद्लाह جَزَّوَجَلَّ ने हमें नाक की ने'मत से नवाजा है. हवा को मरतूब या'नी नम बनाने के लिये नाक रोज़ाना तकरीबन थौथाई गेलन नमी पैदा करती है. सफ़ाई और दीगर सप्त काम नथनों के बाल सर अन्जाम देते हैं. नाक के अन्दर अक़ भुईं बीनी (Microscopic) जाडू है. इस जाडू में गैर म-र-ई या'नी नज़र न आने वाले इअें होते हैं जो हवा के जरीअे दाभिल होने वाले जरासीम को हलाक कर देते हैं. नीज़ इन गैर म-र-ई इअों के ज़िम्मे अक़ और दिइाई निज़ाम भी है जिसे इंग्रेजी में lysozyme (लैसोज़ाइम) कहते हैं, नाक इस के जरीअे से आंभों को Infection (या'नी जरासीम) से मडकूज़ रहती है. اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِهِ ! बुजू करने वाला नाक में पानी यढाता है जिस से जिस्म के इस अहम तरीन आवे नाक की सफ़ाई हो जाती है और पानी के अन्दर काम करने वाली बर्की रौ से नाक के अन्दरूनी गैर

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : على الله تعالى عليه وسلم : उस शप्स की नाक भाक आलूद हो जिस के पास मेरा ठिक हो और वोह मुज पर हुइरे पाक न पड़े. (76)

म-र-ई इओों की कारकईगी को तक्वियत मिलती है और मुसल्मान वुजू की ब-र-कत से नाक के बे शुमार पेयीदा अमराज से मडकूज हो जाता है. दाईभी नजूला और नाक के जम्म के मरीजों के लिये नाक का गुस्ल (या'नी वुजू की तरह नाक में पानी यढाना) बेउद मुईद है.

येहरा धोने की छिकमते

आज कल इजाओों में धूअें वगैरा की आलू-दगियां बढती जा रही हैं, मुप्तलिङ्ग कीभियावी मादे सीसा वगैरा मैल कुयैल की शकल में आंभों और येहरे वगैरा पर जमता रहता है, अगर येहरा न धोया जाओ तो येहरे और आंभें कई अमराज से दो यार हो जाअें. ओक यूरोपियन डोक्टर ने ओक मकाला लिखा जिस का नाम था. : आंभ, पानी, सिहूहत (Eye, Water, Health) ईस में उस ने ईस बात पर जोर दिया के “अपनी आंभों को दिन में कई बार धोते रहो वरना तुम्हें अतरनाक बीमारियों से दो यार होना पडेगा.” येहरा धोने से मुंड पर कील नहीं निकलते या कम निकलते हैं. माहिरिने हुस्न व सिहूहत ईस बात पर मुत्तईक हैं के हर तरह के Cream और Lotion वगैरा येहरे पर दाग छोडते हैं, येहरे को पूब सूरत बनाने के लिये येहरे को कई बार धोना लाजिमी है. “अमेरीकन काउन्सिल इंर ब्यूटी” की सरकई मिम्बर “बेयर” ने क्या पूब ईन्किशाफ़ किया है कलती है : “मुसल्मानों को क़िसी क़िस्म के कीभियावी लोशन की छाजत नहीं वुजू से ईन का येहरा धुल कर कई बीमारियों से मडकूज हो जाता है.” मडकमओे माहोलियात के माहिरिन का कहना है : “येहरे की ओलर्ज से बचने के लिये ईस को बार बार धोना याहिये.” اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ ! ओसा सिई वुजू के जरीओे ही मुम्किन है.

करमान मुस्तक। صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर रोजे जुमुआ दो सो बार दुइद पाक पढा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे. (अहमद)

! الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ ! वुजू में येहरा धोने से अलज्ज से येहरे की डिफ़ाजत होती, इस का मसाज हो जाता, पून का दौरान येहरे की तरफ़ रवां हो जाता, मैल कुयैल भी उतर जाता और येहरे का हुस्न हो बाला हो जाता है.

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

अन्धा पन से तड़फ़्फ़ुज

मीठे मीठे इस्लामी भाईयो ! आंभों की अक भीमारी है जिस में इस की रतूबते अस्विय्या या'नी अस्वी तरी कम या अत्म हो जाती और मरीज आडिस्ता आडिस्ता अन्धा हो जाता है. तिब्बी उसूल के मुताबिक अगर भंवों को वक्तन इ वक्तन तर किया जाता रहे तो इस भौइनाक मरज से तड़फ़्फ़ुज हासिल हो सकता है. ! الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ ! वुजू करने वाला मुंड धोता है और इस तरह उस की भवें तर होती रहती हैं. आशिकाने रसूल की दाढी भी वुजू में धुलती है और इस में भी पूब डिक्मते हैं, डॉक्टर प्रोफ़ेसर ज्योर्ज अल कहता है : “मुंड धोने से दाढी में उलजे हुअे जरासीम बड जाते हैं, जउ तक पानी पछोंयने से बालों की जउं मजभूत होती हैं, दाढी के भिलाल से जूओं का अतरा दूर होता है, दाढी में पानी की तरी के ठहराव से गरदन के पङ्खों, थाईराईड ग्लैंड और गले के अमराज से डिफ़ाजत होती है.”

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

कोडनियां धोने की डिक्मते

कोडनी पर तीन³ बडी रगें हैं जिन का तअद्लुक दिल्, जिगर और दिमाग से है और जिस्म का येह डिस्सा उभूमन ढका रहता है अगर इस को पानी और हवा न लगे तो मु-तअदद दिमागी और

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ: मुज़ पर दुव्दह शरीफ़ पढो अल्लाह तुम पर रहमत भेजेगा. (अबुदर)।

आ'साबी अमराज़ पैदा हो सकते हैं. वुजू में कोहनियों समेत हाथ धोने से दिल, जिगर और दिमाग को तक्वियत पड़ोयती है और इस तरह वोह इन के अमराज़ से महझूज़ रहेंगे. मज़ीद येह के कोहनियों समेत हाथ धोने से सीने के अन्दर ज़पीरा शुदा रोशनियों से बराहे रास्त ईन्सान का तअल्लुक काईम हो जाता है और रोशनियों का हुजूम अेक बहाव की शकल ईप्तियार कर लेता है, इस अमल से हाथों के अ-जलात या'नी कलपुर्जे मज़ीद ताकत वर हो जाते हैं.

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

मस्ह की हिकमते

सर और गरदन के दरमियान “हल्लुल वरीद” या'नी शहरग वाकेअ है इस का तअल्लुक रीढ की हडी और हराम मज्ज और जिस्म के तमाम तर ज़ेडों से है. जब वुजू करने वाला गरदन का मस्ह करता है तो हाथों के ज़रीअे बर्की रौ निकल कर शहरग में ज़पीरा हो जाती है और रीढ की हडी से डोती हुई जिस्म के तमाम आ'साबी निज़ाम में झैल जाती है और इस से आ'साबी निज़ाम को तुवानाई हासिल डोती है.

पागलों का डॉक्टर

अेक साहिब का बयान है : मैं इन्स में अेक जगह वुजू कर रहा था, अेक शप्स भडा भडे गौर से मुजे देभता रहा ! जब मैं झारिग हुवा तो उस ने मुज से पूछा : आप कौन और कहां के वतनी हैं ? मैं ने जवाब दिया : मैं पाकिस्तानी मुसल्मान हूं. पूछा : पाकिस्तान में कितने पागल भाने हैं ? इस अज्जबो गरीब सुवाल पर मैं योंका मगर मैं ने कह दिया : दो यार डोंगे. पूछा : अभी तुम ने क्या किया ? मैं ने कहा : वुजू. कहने

करमाने मुस्तकاً صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज पर कसरत से दुरुद पाक पढो बेशक तुम्हारा मुज पर दुरुद पाक पढना तुम्हारे गुनाहों के लिये मङ्गिरत है. (भा. 1/10)

लगा : क्या रोजाना करते हो ? मैं ने कहा : हां, बल्के पांच वक्त. वोह बडा हैरान हुवा और बोला : मैं Mental Hospital में सर्जन हूं और पागल पन के अस्बाब की तहकीक मेरा मशगला है, मेरी तहकीक येह है के दिमाग से सारे बदन में सिग्नल जाते हैं और आ'जा काम करते हैं, हमारा दिमाग हर वक्त Fluid (माअेअ) के अन्दर Float¹ कर रहा है. इस लिये हम त्वागदौड करते हैं और दिमाग को कुछ नहीं होता अगर वोह कोई Rigid (सप्त) शै होती तो अब तक टूट चुकी होती. दिमाग से यन्द् भारीक रगों (Conductor) (भूसिल या'नी पडोयाने वाली) बन कर हमारी गरदन की पुश्त से सारे जिस्म को जाती हैं. अगर बाल बहुत बढा दिये जाअें और गरदन की पुश्त को भुश्क रखा जाअे तो इन रगों या'नी (Conductor) में भुश्की पैदा हो जाने का ખतरा ખडा हो जाता है और बारहा ऐसा भी होता है के इन्सान का दिमाग काम करना छोड देता है और वोह पागल हो जाता है लिहाजा मैं ने सोया के गरदन की पुश्त को दिन में दो बार जरूर तर किया जाअे. अभी मैं ने देखा के हाथ मुंह धोने के साथ साथ गरदन के पीछे भी आप ने कुछ किया है, वाकेई आप लोग पागल नहीं हो सकते. मजीद येह के मसू करने से लू लगने और गरदन तोड भुખार से भी बयत होती है.

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

पाउं धोने की डिक्मतें

पाउं सब से जियादा धूल आवूद होते हैं. पहले पहल infection

(या'नी जरासीम) पाउं की उंगलियों के दरमियानी हिस्से से शुरू होता

¹ या'नी तैरना.

﴿فَرْمَانَهُ مُسْتَكْفًا﴾ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : જો મુઝ પર એક દુરુદ શરીફ પઢતા હૈ અલ્લાહ ઁસ કે લિયે એક કીરાત અજ લિખતા હૈ ઁર કીરાત ઉલુદ પહાડ જિતના હૈ. (મુબારક)

હૈ. વુજૂ મેં પાઉ ધોને સે ગઢો ગુબાર ઁર જરાસીમ બહ જાતે હૈં ઁર બયે ખુયે જરાસીમ પાઉ કી ઉગ્લિયોં કે ખિલાલ સે નિકલ જાતે હૈં. લિહાઝા વુજૂ મેં સુન્નત કે મુતાબિક પાઉ ધોને સે નીંદ કી કમી, દિમાગી ખુશકી, ઘબરાહટ ઁર માયૂસી (Depression) જૈસે પરેશાન કુન અમરાઝ દૂર હોતે હૈં.

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

વુજૂ કા બયા હુવા પાની

આ'લા હઝરત رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ફરમાતે હૈં : હુજૂર صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ને વુજૂ ફરમા કર બયા હુવા પાની ખડે હો કર નોશ ફરમાયા ઁર એક હદીસ મેં રિવાયત ક્રિયા ગયા કે ઈસ કા પાની 70 મરઝ સે શિક્ષા હૈ (ફતાવા ર-ઝવિયા, જિ. 4, સ. 575) ફુ-કહાએ કિરામ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ફરમાતે હૈં : “કિસી બરતન યા લોટે સે વુજૂ ક્રિયા હો તો ઁસ કા બયા હુવા પાની કિબ્લા રૂ ખડે હો કર પીના મુસ્તહબ હૈ.” (تَبْيِيْنُ الْحَقَائِقِ ج ١ ص ٤٤) વુજૂ કા બયા હુવા પાની પીને કે બારે મેં એક મુસલ્માન ડોક્ટર કા કહના હૈ : ﴿1﴾ ઈસ કા પહલા અસર મસાને પર પડતા, પેશાબ કી રુકાવટ દૂર હોતી ઁર ખૂબ ખુલ કર પેશાબ આતા હૈ ﴿2﴾ ઈસ સે ના જાઈઝ શહવત સે ખલાસી હાસિલ હોતી હૈ ﴿3﴾ જિગર, મે'દા ઁર મસાને કી ગરમી દૂર હોતી હૈ.

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

ઈન્સાન યાંદ પર

મીઠે મીઠે ઈસ્લામી ભાઈયો ! વુજૂ ઁર સાઈન્સ કા મૌઝૂઅ ચલ રહા થા, આજ કલ સાઈન્સી તહકીકાત કી તરફ બા'ઝ લોગોં કા ઝિયાદા

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ : जिस ने किताब में मुज़ पर दृढ़दे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा किश्ते उस के लिये ईस्तिफ़ार करते रहेंगे. (अ. ५)

रुजदान होता है बल्के कई जैसे ली अफ़राद ईस मुआ-शरे में पाये जाते हैं जो ईग्रेज मुडकिङ्कीन और साईन्स दानों से काफ़ी मरउिब होते हैं, औसों की बिदमत में अर्ज है के बहुत सारे लकाईक जैसे हैं जिन की तलाश में साईन्स दान आज सर टकरा रहे हैं और मेरे भीठे भीठे आका मक्की म-दनी मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ उन को पहले ही बयान फ़रमा चुके हैं. देबिये ! अपने दा'वे के मुताबिक साईन्स दान अब यांद पर पडोंये हैं मगर मेरे प्यारे प्यारे आका मदीने वाले मुस्तफ़ा صَلَّय اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ ये ल अल्फ़ाज लिखते वक्त (या'नी मुहर्मुल हुराम 1434 हि.) तकरीबन 1434 साल पहले सफ़रे मे'राज में यांद से ली वराउल वरा (या'नी दूर से दूर) तशरीफ़ ले जा चुके हैं. मेरे आका आ'ला हजरत रَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِ के उर्स शरीफ़ के मौकअ पर दारुल उलूम अम्जदिय्या आलमगीर रोड बाबुल मदीना कराची में मुन्अकिद होने वाले अक मुशाईरे में शिकत का मौकअ मिला जिस में लदाईके बफ़िशश शरीफ़ से ये ल "मिस्त्रे तरह" रपा गया था :

सर वोही सर जो तेरे कदमों पे कुरबान गया

हजरते सदरुशशरीअत, बहरुतारीकत, मुसन्निके बहारे शरीअत, जलीफ़अे आ'ला हजरत, मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'जमी साहिब رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی के शलजादे मुफ़्स्सिरे कुरआन हजरते अल्लामा अब्दुल मुस्तफ़ा अज़्हररी رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی ने उस मुशाईरे में अपना जो कलाम पेश किया था उस का अक शे'र मुला-हजा हो :

कहतें हैं सत्ह पे यांद की ईन्सान गया अर्शे आ'जम से वरा तयबा का सुल्तान गया

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर अक बार दुरुदे पाक पढा अल्लाह उस पर दस रकमते भेजता है. (स्ल)

या'नी कडा ज़ रडा है के अब ईन्सान यांद पर पछोय गया है ! सय पूछो तो यांद बहुत ही करीब है, मेरे भीठे मदीने के अ-जमत वाले सुल्तान, शहन्शाहे जमीनो आस्मान, रकमते आ-लमिय्यान, सरदारे दौ² जहान صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मे'राज की रात यांद को पीछे छोडते हुअे अर्शे आ'जम से ली बहुत ठीपर तशरीफ़ ले गअे.

अर्श की अकल दंग हे यर्भ में आस्मान हे ज़ने मुराद अब किधर डाअे तेरा मकान हे

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

नूर का फिलोना

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! रडा यांद, जिस पर साईन्स दान अब पछोयने का दा'वा कर रडा है वोड यांद तो मेरे प्यारे आका صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के ताबेअे इरमान है. युनान्ये “दलाईलुनुबुव्वड” में है : सुल्ताने दौ² जहान صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के ययाजान हजरते सय्यिदुना अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا इरमाते हैं, मैं ने बारगाहे रिसालत में अर्ज की : या रसूलद्लाड صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! मैं ने आप (के बयपन शरीफ़ में आप) में औसी बात देभी ज़े आप की नुबुव्वत पर दलालत करती थी और मेरे इमान लाने के अस्बाब में से येड ली अक सभब था. युनान्ये मैं ने देभा के आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ गहवारे (या'नी पिंधोडे) में लैटे हुअे यांद से बातें कर रहे थे और जिस तरफ़ आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ उगली से ईशारा इरमाते यांद उसी तरफ़ डो ज़ता था. सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने इरमाया : “मैं उस से बातें करता था और वोड मुज से बातें करता था और मुजे रोने से बहलाता था और मैं उस के गिरने की आवाज सुनता था ज़ब के वोड अर्शे ईलाही رَعَزُوجَلُّ के नीये सजदे में गिरता था.”

(دلائل النبوة للبيهقي ج ٢ ص ٤١)

इरमाने मुस्तफ़ी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो शप्स मुज पर दुइद पाक पढना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया. (جران)

आ'ला उजरत عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى इरमाते हैं :

यांढ जुक जता जिधर उगवी उढाते मइद में क्या ही यवता था ईशारों पर भिलोना नूर का अेक मडुब्बत वाले ने कडा है :

भेवते थे यांढ से बयपन में आका ईस लिये येड सरापा नूर थे वोह था भिलोना नूर का

मो'जिजअे शक्कुल कभर

“बुभारी शरीफ़” में है : कुइइारे मक्का ने सरकारे मदीना

की भिदमते आ अ-र-कत में मो'जिजा दिभाने का मुता-लभा किया तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने उन्हें यांढ के दौरे टुकडे कर के दिभा दिये. (بخاری ج ۲ ص ۵۷۹ حدیث ۳۸۶۸) अद्लाड तभा-र-क व तआला पारड 27, सू-रतुल कभर की पहली और दूसरी² आयत में ईशाद इरमाता है :

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ
اِقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ وَاَنْشَقَّ
القَمَرُ ۝۱ وَاِنْ يَّرَوْا آیَةً یُعْرِضُوْا
وَقِیْلُوْا سِحْرٌ مُّسْتَبِرٌ ۝۲

तर-ज-मअे क-जुल ईमान : अद्लाड के नाम से शुइअ जो बहुत मेइरबान रहमत वाला. पास आई कियामत और शक डो गया यांढ और अगर देभें कोई निशानी तो मुंड इेरते और कडते हैं येड तो जइ है यला आता.

मुइस्सिरे शहीर डकीमुल उम्मत उजरते मुइती अडमद यार

भान بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ईस डिस्सअे आयत وَاَنْشَقَّ الْقَمَرُ (तर-ज-मअे क-जुल ईमान : और शक डो गया यांढ) के तइत इरमाते हैं : ईस आयत में डुजूर (صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) के अेक अडे मो'जिजअे शक्कुल कभर (या'नी यांढ के दौरे टुकडे डो जाने) का जिक है. (नूरुल ईरफ़ान, स. 843)

કરમાને મુસ્તફા صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरई पाक न पढा तहकीकत वोह बढ भप्त हो गया. (हंन)

ઈશારે સે ચાંદ ચીર દિયા, ઘુપે હુએ ખુર કો ફેર લિયા

ગએ હુએ દિન કો અસ્ર કિયા, ચેહ તાબો તુવાં તુમ્હારે લિયે

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْ مُحَمَّد

سِرْفِ اَدْلَاہِ عَزَّ وَجَلَّ کے لिये

મીઠે મીઠે ઈસ્લામી ભાઈયો ! વુઝૂ કે તિબ્બી ફવાઈદ સુન કર આપ ખુશ તો હો ગએ હોંગે મગર અર્જ કરતા ચલૂં કે સારે કા સારા ફન્ને તિબ ઝન્નિયાત પર મબ્ની હૈ. સાઈન્સી તહકીકાત ભી હત્મી (યા'ની ફાઈનલ) નહીં હોતી, બદલતી રહતી હેં. હાં અદલાહ વ રસૂલ صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم કે અહકામાત અટલ હેં વોહ નહીં બદલેંગે. હમેં સુન્નતોં પર અમલ તિબ્બી ફવાઈદ પાને કે લિયે નહીં સિર્ફ વ સિર્ફ રિઝાએ ઈલાહી عَزَّ وَجَلَّ કી ખાતિર કરના ચાહિયે, લિહાઝા ઈસ લિયે વુઝૂ કરના કે મેરા બ્લડ પ્રેશર નોર્મલ હો જાએ યા મેં તાઝા દમ હો જાઊંગા યા ડાએટિંગ કે લિયે રોઝા રખના તાકે ભૂક કે ફવાઈદ હાસિલ હોં. સફરે મદીના ઈસ લિયે કરના કે આબો હવા ભી તબ્દીલ હો જાએગી ઓર ઘર ઓર કારોબારી ઝન્ઝટ સે ભી કુછ દિન સુકૂન મિલેગા. યા દીની મુતા-લઆ ઈસ લિયે કરના કે મેરા ટાઈમ પાસ હો જાએગા. ઈસ તરહ કી નિચ્ચતોં સે આ'માલ બજા લાને વાલોં કો સવાબ નહીં મિલેગા. અગર હમ અમલ અદલાહ عَزَّ وَجَلَّ કો ખુશ કરને કે લિયે કરેંગે તો સવાબ ભી મિલેગા ઓર ઝિમ્નન ઈસ કે ફવાઈદ ભી હાસિલ હો જાએંગે. લિહાઝા ઝાહિરી ઓર બાતિની આદાબ કો મલ્હૂઝ રખતે હુએ વુઝૂ ભી હમેં અદલાહ عَزَّ وَجَلَّ કી રિઝા હી કે લિયે કરના ચાહિયે.

तसव्वुइ का अजीम म-दनी नुस्खा

હુજજતુલ ઈસ્લામ ઈમામ મુહમ્મદ બિન મુહમ્મદ બિન મુહમ્મદ

करमाने मुस्तक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर अक बार दुइडे पाक पढा अद्लाह उस पर दस रकमतें बेजता है. (स्)

गज़ाली. عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي : वुजू से इरागत के बा'द जब आप नमाज़ की तरफ़ मु-तवज्जुह हों उस वक़्त येह तसव्वुर कीजिये के जिन आहिरि आ'ज़ा पर लोगों की नज़र पडती है वोह तो ब आहिर ताहिर (या'नी पाक) हो चुके मगर हिल को पाक किये बिगैर बारगाहे ँलाडी. عَزَّ وَجَلَّ में मुनाज़ात करना हया के खिलाफ़ है क्यूंके अद्लाह हिलों को भी देभने वाला है. मज़ीद इरमाते हैं : आहिरि वुजू कर लेने वाले को येह बात याद रभनी चाहिये के हिल की तहारत (या'नी सफ़ाई) तौबा करने और गुनाह को छोडने और उम्हा अप्लाक अपनाने से होती है. जो शप्स हिल को गुनाहों की आलू-दगियों से पाक नहीं करता इकत आहिरि तहारत (या'नी सफ़ाई) और जैबो जीनत पर इक़्तिफ़ा करता है उस की भिसाल उस शप्स की सी है जो बादशाह को मद्दुगि करता है और अपने घर को बाहर से ખૂब यमकाता है और रंगो रोगन करता है मगर मकान के अन्दरनी हिससे की सफ़ाई पर कोई तवज्जुह नहीं देता, अब ऐसी सूरत में जब बादशाह उस के मकान के अन्दर आ कर गन्दगियां देभेगा तो वोह नाराज़ होगा या राजी येह हर ज़ी शुडिर खुद समज़ सकता है. (اخْتِيارُ الْعُلَمَاءِ ج ١ ص ١٨٠ مَلْفَصًا)

सुन्नत साईन्सी तहकीक की मोहताज नहीं

भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! याद रभिये ! मेरे आका. صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की सुन्नत साईन्सी तहकीक की मोहताज नहीं और हमारा मकसूद इत्तिबाअे साईन्स नहीं इत्तिबाअे सुन्नत है, मुजे कहुने दीजिये के जब यूरोपियन माहिरिन बरस्था बरस की अरक रेजी के बा'द नतीजे का हरीया ખोलते हैं तो उन्हें सामने मुस्कुराती नूर बरसाती सुन्नते मुस-त-इवी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ही नज़र आती है ! दुन्या में लाभ सैरो सियाहत कीजिये, जितना याहे ऐशो इशरत कीजिये,

करमाने मुस्तकी صلی اللہ تعالیٰ علیہ و آلہ وسلم : श्री शप्स मुज पर दुइदे पाक पढना भूल गया वोह जन्त का रास्ता भूल गया. (جران)

मगर आप के दिल को लकीकी राहत मुयस्सर नहीं आयेगी, सुकूने कलब सिर्फो सिर्फ यादे भुदा عَزَّوَجَلَّ में मिलेगा. दिल का येन एशके सरवरे कौनेन صَلَّى اللہ تعالیٰ علیہ و آلہ وسلم ही में हासिल होगा. दुन्या व आभिरत की राहतें सार्धन्सी आलात T.V., VCR और internet के रू बरू नहीं एत्तिबाअे सुन्नत में ही नसीब होंगी. अगर आप वाकेई दोनों² जहां की लवाएयां याहते हैं तो नमाजों और सुन्नतों को मजभूती से थाम लीजिये और एन्हें सीभने के लिये दा'वते एस्लामी के म-दनी काइलौं में सफ़र अपना मा'भूल बना लीजिये. हर एस्लामी ल्वाए निय्यत करे के मैं जिन्दगी में कम अज कम अेक बार यक मुशत 12 माह, हर 12 माह में 30 दिन और हर माह 3 दिन सुन्नतों की तरबिय्यत के म-दनी काइले में सफ़र किया करूंगा, اِنْ شَاءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ.

तेरी सुन्नतों पे यल कर मेरी रूह जब निकल कर यले तू गले लगाना म-दनी मदीने वाले

صَلُّوْا عَلٰى الْحَبِيْب! صَلَّى اللہ تعالیٰ علیٰ محمّد



तालिबे गमे मदीना व
अकीअ व मकिरत व
बे हिसाब जन्तुल
किरदोस में आका
का पडोस



21 मुहरमुल हराम 1434 सि.हि.

6-12-2012

येह रिसाला पढ कर दूसरे को दे दीजिये

शाही गमी की तकरीबात, एजतिमाआत, आ'रास और जुवूसे मीलाह वगैरा में मक-त-भतुल मदीना के शाअेअ कर्दा रसाएल और म-दनी इलौं पर मुशतमिल पेम्फलेट तकसीम कर के सवाब कमाएये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोहके में देने के लिये अपनी दुकानों पर ली रसाएल रभने का मा'भूल बनाएये, अण्बार फ़रोशों या बख्यो के जरीअे अपने महल्ले के घर घर में माहाना कम अज कम अेक अदद सुन्नतों लरा रिसाला या म-दनी इलौं का पेम्फलेट पडोया कर नेकी की दा'वत की धूमें मयाएये और पूब सवाब कमाएये.

سुन्नत की ज़रूरतें

سُبْحَانَكَ يَا اَللّٰهُمَّ! तुलसीजी द्वारा आने वाली सुन्नत की आवश्यकताओं पर सियासी तरीक़े का 'वते' ईस्लामी के महक़े महक़े म-दनी माहोल में अ कसरत सुन्नतों सीपी और सिपाई जाती हैं, हर जुमा'रात ईसा की नमाज़ के बाद आप के शहर में होने वाले दा'वते ईस्लामी के हक़तावार सुन्नतों पर ईजतिमाअ में रिआओ ईबादी के लिये अच्छी अच्छी निष्पत्तों के साथ सारी रात गुज़रने की म-दनी इज्तिहा है. आशिकाने रसूल के म-दनी काफ़ियों में अ निष्पत्ते सवाल सुन्नतों की तरबिष्पत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक़े मदीना के ज़रीओ म-दनी ईन्आमात का रिआवा पुर कर के हर म-दनी माह के इम्तिहाई हर दिन के अन्दर अन्दर अपने यहाँ के जिम्मेदार को जन्म करवाने का मा'भूल बना लीजिये, سُبْحَانَكَ يَا اَللّٰهُمَّ! इस की अ-र-कत से पाअन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की ठिक़ाज़त के लिये दुक़ने का ज़ेहून बननेगा.

हर ईस्लामी भाई अपना येह ज़ेहून बनाओ के "मुझे अपनी और सारी दुनिया के लोगों की ईस्लाम की कोशिश करनी है. سُبْحَانَكَ يَا اَللّٰهُمَّ!" अपनी ईस्लाम की कोशिश के लिये "म-दनी ईन्आमात" पर अमल और सारी दुनिया के लोगों की ईस्लाम की कोशिश के लिये "म-दनी काफ़ियों" में सफ़र करना है. سُبْحَانَكَ يَا اَللّٰهُمَّ!



मक-त-मदुल मदीना
दर'फते ईस्लामी



ईज्जते मदीना, श्री डीनिया जगीये डे सफ़ने, मिरज़ापूर, अहमदशाहबाद, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net